अब तक की चर्चा इस बात को सामने लाती है कि भौतिक जगत की तुलना में आध्यात्मिक जगत के लिए विपरीत गुणों की आवश्यकता होती है।

भौतिक क्षेत्र में, आत्म सम्मान महत्वपूर्ण है। जबकि दिव्य क्षेत्र में दीनता महत्वपूर्ण है, अन्य लोगों को सम्मान देना महत्वपूर्ण है। भौतिक क्षेत्र में धन, शक्ति, कौशल, प्रसिद्धि, विलासिता, सौंदर्य आदी सब वांछनीय चीजे हैं, जबकि आध्यात्मिक क्षेत्र में वे किसी काम के नहीं हैं बल्कि इनका होना आध्यात्मिक प्रगती के लिए बाधक है । भौतिक एवं आध्यात्मिक जगत की आवश्यकताएं विपरीत क्यों हैं? उत्तर है कि भौतिक वादी शरीर को 'मैं' कहता है इसके विपरित आध्यात्म वादी आत्मा को 'मैं' के रूप में रखता है। भौतिक 'मैं' शरीर है जबकि आध्यात्मिक 'मैं' आत्मा है। चूँकि भौतिक क्षेत्र शरीर को महत्व देता है, भौतिक वादी कामुक सुख, शारीरिक सुख, भौतिक वस्तुओं का बाहरी ज्ञान आदी शरीर संबंधी वस्तुओं में आनंद ढूंढता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ईश्वरीय क्षेत्र आत्मा को महत्व देता है और इसलिए खोज क्षेत्र ईश्वर और ईश्वर का दिव्य क्षेत्र है।

समस्या यह है कि आत्मा को किसी भी तरह का काम करने के लिए मन और शरीर की आवश्यकता होती है। इसलिए, मन और शरीर हमेशा आत्मा से जुड़े होते हैं। अशुद्ध स्थिति के कारण असीम सुख प्राप्त करने में असमर्थ, मन अल्पकालिक भौतिक सुख पर निर्भर करता है जिसे शारीरिक सुख के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। चूँकि भौतिक सुख आसानी से उपलब्ध हैं, मन को उन दिव्य सुखों में कोई रुचि नहीं है जो

आसानी से उपलब्ध नहीं हैं। चूँकि दिव्य सुख प्राप्त नहीं हैं, मन हमेशा संतुष्टी की अवस्था में नहीं रहता और इसलिए संतुष्टि के लिए वापस भौतिक सुखों की तलाश करता है। इस दुष्टचक्र को तोड़ने की जरूरत है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132